IMPACT FACTOR 7.50 (SJIAI)

बिहार शोध समागम
BIHAR SHODH SAMAAGAM

Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 2, April-june, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.19698504

ISSN : 3048-6971

"शिक्षण पद्धतियों में नवाचार"

प्रो. डॉ. राजेन्द्र कुमार श्रीमाली
शिक्षा विभाग
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय, बुझावड़, जोधपुर

धर्मेन्द्र गहलोत
शोधार्थी
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय, बुझावड़, जोधपुर

शैक्षिक नवाचार की भूमिका –

शैक्षिक नवाचार का कार्य मानवीय तथा गैर मानवीय संसाधनों का शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए यथा सम्भव कम से कम धन व श्रम को व्यय करके अधिक से अधिक उपलब्धि प्राप्त करना है। अतः प्रबन्ध का कार्य भी एक शैक्षिक कार्य ही कहा जाएगा। जब वह पूरे विद्यालय की शिक्षा की व्यवस्था करता है, तो शैक्षिक नवाचारों को विद्यालय में प्रविष्ट कराने का भी उसका कुछ न कुछ दायित्व अवश्य बनता है। यहाँ पर प्रबन्ध का कुछ न कुछ दायित्व इसलिए कहा है क्योंकि शैक्षिक नवाचारों का सैद्धान्तिक पक्ष शिक्षकों एवं शिक्षाविदों के कार्य क्षेत्र में आता है, किन्तु उन्हें विद्यालय में लागू करना या नहीं करना है, यदि करना है तो किस सीमा तक लागू करना है और किस प्रकार लागू करना है, इस कार्य का उत्तरदायित्व बहुत कुछ प्रधानाचार्य और अध्यापकों पर ही निर्भर होता है, किन्तु यदि इसमें प्रबन्ध तंत्र का सहयोग और समर्थन उनके साथ हो तो शैक्षिक उन्नयन की दृष्टि से बहुत उत्तम होता है। ऐसी स्थिति में प्रबन्धकों, प्रधानाचार्य तथा शिक्षकों को मिलकर कोई समुचित हल निकालना चाहिये। जहाँ तक सम्भव हो, ऐसे प्रयास किये जाने चाहिये, जिनसे विद्यालयों को शैक्षिक नवाचारों से वंचित न रहना पड़े। शैक्षिक नवाचारों को सामान्यतया क्षेत्र की सीमा में बांधना कोई आसान कार्य नहीं है। जिस प्रकार शिक्षा की कोई सीमा नहीं होती, उसी प्रकार शैक्षिक नवाचार भी गिनाए नहीं जा सकते हैं। कभी–कभी कोई नवीन चिन्तन अथवा विचार किसी भी प्रकार के शैक्षिक नवाचार को जन्म दे सकता है। शैक्षिक नवाचार के क्षेत्र में अनेक अनुसंधान होते रहते हैं जैसे भारत सरकार की नयी शिक्षा नति 1986, अल्पसंख्यकों–पिछड़े व वंचितों की शिक्षा, सतत शिक्षा, शिक्षक प्रशिक्षण, ग्रामीण विद्यालयों के विकास, दूरस्थ शिक्षा आदि। इस प्रकार विद्यालयों के लिए शैक्षिक नवाचारों के क्षेत्र व भूमिका बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है।

नवाचार का अर्थ – नवाचार शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। नव + आचार। नव का अर्थ है नया और आचार का अर्थ है आचरण या परिवर्तन ।

नवाचार वह परिवर्तन है जो पूर्व स्थित विधियों आदि में नवीनता का संचार करता है। नवाचार शब्द अंग्रेजी के इनोवेशन शब्द के इनोवेट शब्द से बना हुआ है। जिसका अर्थ होता है नवीनता लाना या परिवर्तन लाना है। नई तकनीकी, नए कार्य, नई सेवा, नया उत्पाद आदि नवाचार को अर्थ तंत्र का सारथी माना जाता है। शैक्षिक नवाचार में क्रियाशीलता एवं प्रायोगिकता की प्रवृति विद्यमान होती है। शैक्षिक नवाचार का संबंध प्रमुख रूप से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी एवं रूचिपूर्ण बनाने से होता है।

नवाचार की परिभाषा –

एच.जी. वारनेट के अनुसार – ''नवाचार एक विचार है, व्यवहार है जो नवीन है और वर्तमान स्वरूप से गुणात्मक दृष्टि से भिन्न है।''

ई.एस. रोजर्स – नवाचार वह विचार है जिसकी प्रतिति, व्यक्ति नवीन विचारों के रूप में करे।''

नवाचार की विशेषताएँ – नवाचार की विशेषताएँ निम्नलिखित है –

- शिक्षा में नवाचार में क्रियाशीलता एवं प्रायोगिकता की प्रवृति उपस्थित होती है।
- यह प्रयास पूर्ण किया जाने वाला कार्य है।
- नवाचार के द्वारा वर्तमान विधियों और परिस्थितियों में सुधार लाने का प्रयास किया जाता है।
- शिक्षा में नवाचार के माध्यम से नवीनतम तकनीकी को विद्यालय में पहुँचाया जाता है।
- नवीन शिक्षण तकनीकी के माध्यम से बालक का सर्वांगीण विकास सम्भव होता है।
- शैक्षिक नवाचारों में नवीन तकनीकी का प्रयोग होता है, जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करती है।
- नवाचार के द्वारा वर्तमान परिस्थितियों में सुधार लाने का प्रयत्न किया जाता है।

शैक्षिक नवाचार के उद्देश्य –

शैक्षिक नवाचार के उद्देश्य निम्नलिखित है –

- शिक्षा में नवाचार के माध्यम से अधिगम प्रक्रिया को सरल बनाया जाता है।
- बालाकों का सर्वांगीण विकास किया जाता है, जिससे बालकों की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास हो सके।
- छात्रों और शिक्षकों का नवीनतम वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हो सके, जिससे वो अंधविश्वास और कुरीतियों से दूर रहे।
- शिक्षा में शिक्षण नवाचारों के प्रयोग का मुख्य उद्देश्य शिक्षा व्यवस्था को विश्व स्तरीय प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ना।

नवाचार का महत्व –

शिक्षा में नवाचार को निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर समझा जा सकता है–

- मूल्य शिक्षा के क्षरण को रोकने के लिए।
- सांप्रदायिक सद्भाव बढ़ाना।
- परिवर्तन के अनुसार शिक्षा प्रणाली।
- अनेक समस्याओं का समाधान।
- क्रिया शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की प्रभावशीलता के लिए।
- ज्ञान का स्थायित्व।
- शैक्षिक उद्देश्य की प्राप्ति हेतु शिक्षण ।
- छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए, कौशलों का विकास के लिए।
- अधिगम सामग्री के प्रयोग के लिए।
- नवीन शिक्षण विधियों के ज्ञान हेतु वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास।
- शिक्षा व्यवस्था में सुधार के लिए।
- अनुसंधान के लिए।

मनोविज्ञान सिद्धान्तों के प्रयोग के लिए शैक्षिक नवाचार की आवश्यकता – शैक्षिक नवाचार की आवश्यकता निम्नलिखित है –

- कल्याणकारी राज्य की स्थापना के लिए।
- तीव्र आर्थिक विकास हेतु।
- जनसंख्याओं की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु।
- मानव संसाधन के विकास हेतु।
- सामाजिक परिवर्तन के अनुसार शिक्षा।
- रोजगार के अवसरों में वृद्धि हेतु।

शैक्षिक नवाचार का क्षेत्र –

शैक्षिक नवाचार के कुछ प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित है –

- शिक्षण अधिगम ।
- मूल्यांकन।
- पाठ्य सहगामी क्रियाकलाप।
- सामुदायिक सहभागिता।
- विद्यालय प्रबंधन।

- विषय गत कक्षा – शिक्षण एवं समसामयिक दृष्टिकोण।

शैक्षिक नवाचार शिक्षा की विकासोन्मुख रहने वाली प्रक्रिया को प्रदर्शित करने वाली एक नवीन अवधारणा है। नवाचार शब्द का प्रयोग वैज्ञानिक विकास के युग में शैक्षिक तकनीकी के नवीन प्रावधानों के कारण शैक्षिक नवाचार का महत्व और बढ़ गया है। अन्तर्राष्ट्रीयता, वैश्वीकरण और जनसंचार के आधुनिक संसाधनों ने इसे आज के युग की एक आवश्यकता के रूप में स्थापित कर दिया है। नव का अर्थ है नवीन या नया और आचार का अर्थ होता है व्यवहार अथवा रहन–सहन। आचार को चलन अथवा प्रचलन भी कहा जा सकता है। इस आधार पर शैक्षिक नवाचार को शिक्षा के नवीन प्रचलित व्यवहारों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। शिक्षा के उक्त प्रचलित व्यवहारों के अन्तर्गत उन सभी नवीन अवधारणाओं, विचारों, विधियों, सिद्धान्तों प्रयोगों और सूचनाओं को सम्मिलित किया जा सकता है जो शिक्षाविदों के आधुनिकतम चिन्तन के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुई है। इस प्रकार नवाचार शैक्षिक तकनीकी के रूप में शिक्षा दर्शन, मनोविज्ञान और विज्ञान आदि शिक्षा के समस्त पहलुओं को प्रभावित करता है।

शैक्षिक नवाचार को निम्न रूप में वर्णित किया जा सकता है –

- अनिवार्य सरकारी नीतियों के अन्तर्गत आने वाले शैक्षिक नवाचारों को लागू करना । इनमें शिक्षा संरचना, पाठ्यक्रम, प्रवेश प्रक्रिया आदि को शामिल किया जा सकता है।
- विद्यालय प्रबन्ध में प्रधानाचार्य तथा शिक्षकों की सहभागिता पर विचार करना।
- सम्मेलनों, सेमिनारों, गोष्ठियों में प्रस्तावित किये गए नवाचारों पर विचार करना।
- लोकतांत्रिक मूल्यों को स्थापित करने में नवीन तथ्यों को सम्मिलित करना।
- विद्यार्थी सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा को समझना।
- नवाचार के द्वारा ही शिक्षणोत्तर गतिविधियों का आयोजन करना।
- नवाचार से विद्यार्थी बाल केन्द्रित उपागम एवं गतिविधि आधारित शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को सीखाना।
- शिक्षण में प्रायोगिक एवं व्यवहारिक कार्यों को संपादित करने हेतु आवश्यक तैयारी एवं प्रभावी क्रियान्वयन करना।
- इसके द्वारा शिक्षक को अपने काम के प्रति रचनात्मक, जिम्मेदार एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाने में सहयोग करना।

शिक्षक समाज का वह हिस्सा है जो शिक्षा के माध्यम से बदलाव का कारक है। विद्यालय और शिक्षक दोनों ही अपने परिवेश से प्रभाव ग्रहण करते हैं। शिक्षक प्रशिक्षण एवं स्कूली शिक्षा का गहन संबंध है। ये दोनों ही एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं। प्रभावी शिक्षक प्रशिक्षण स्कूली शिक्षा में गुणवत्ता को सुनिश्चित करता है। एक शिक्षक शिक्षा के वृहत्तर संदर्भों में कार्य करता है जैसे उद्देश्य, पाठ्यक्रम, पाठ्य सामग्री, विधियाँ आदि। शिक्षक शिक्षा को स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम, आवश्यकता एवं अपेक्षताओं के साथ जोड़कर देखा जाना आवश्यक है। शिक्षक को केवल शिक्षण विधियों का ज्ञान होना ही नहीं बल्कि विद्यार्थियों को उनके सामाजिक, आर्थिक परिवेश को तथा सीखने की प्रक्रिया को समझना आवश्यक है। शिक्षकों की क्षमता, संवर्द्धन एवं गुणवत्ता में विकास के लिए शिक्षक शिक्षा में नवाचार की आवश्यकता है।

नवाचार शिक्षण पद्धतियाँ – वर्तमान समय में शिक्षा पूर्णतया बालकेन्द्रित है। हमारी सरकार के द्वारा विद्यालय को सभी भौतिक सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा चुकी है, जैसे विद्यालय भवन, विद्युत व्यवस्था, पाठ्यपुस्तकें, स्कूल, यूनिफार्म, मध्यान्ह भोजन, छात्रवृत्ति, शिक्षण अधिगम सामग्री के लिए धनराशि आदि। इन सभी की सुविधाओं से विद्यालयों में विद्यार्थियों के नामांकन संख्या में वृद्धि हुई है। परन्तु गुणवत्तापरक शिक्षा में अभी भी आशानुरूप सफलता की प्राप्ति नहीं हुई है। जहाँ संख्यात्मक वृद्धि होती है, वहाँ गुणात्मक वृद्धि में कमी आ जाती है। इस कमी को दूर करने के लिए आवश्यक है कि कक्षा में रूचिपूर्ण शिक्षण पद्धति अपनाई जाए जैसे भ्रमण विधि, खेल विधि, कहानी विधि, प्रदर्शन विधि, करके सीखना, प्रोजेक्ट विधि, केस स्टडी विधि तथा विभिन्न प्रकार की अन्य शैक्षिक गतिविधियाँ आदि। इन नवाचारी शिक्षण पद्धतियों से शिक्षण कार्य करने में शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों के लिए ही शिक्षण अधिगम एक रूचिपूर्ण प्रक्रिया बन सकेगी। इन पद्धतियों में शिक्षक एक सलाहकार/सुगमकर्ता के रूप में कार्य करेगा तथा विद्यार्थी को कार्य करके सीखने का अवसर प्रदान करेगा। इस प्रकार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के प्रमुख उद्देश्य है कि बच्चों के पुस्तकीय ज्ञान को उनके बाहरी जीवन से जोड़ा जाए और वर्तमान शिक्षा नीति 2020 राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी इसी बात पर जोर दिया गया है। यह उद्देश्य भी इन पद्धतियों से प्राप्त हो सकेगा। भयमुक्त वातावरण में विद्यार्थी स्वतंत्र होकर अपना कार्य सुगमता से कर सकता है। जिससे उनमें अभिव्यक्ति, अन्वेषण, निर्णय लेने, स्वमूल्यांकन करने की क्षमता तथा सृजनात्मक, रचनात्मक, आत्मविश्वास आदि कौशलों का विकास हो सकेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. https://www.jagran.com
2. https://sarkariguider.com
3. शैक्षिक तकनीकी – डॉ. एस.पी. कुलश्रेष्ठ
4. शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार – डॉ. एस.पी. कुलश्रेष्ठ
5. शैक्षिक तकनीकी के आयाम – रमेश प्रसाद पाठक